ISSN 2321-0567
Vol. X, Issue II (Oct. – 2022)

विकास प्रशासनः उद्देश्य व समस्याएं

किरन रानी
शोधार्थिनी
एस.एस.वी. (पीजी) कॉलेज, हापुड़।

डॉ. शशी वशिष्ठ
असिस्टेंट प्रोफेसर
एस.एस.वी. (पीजी) कॉलेज, हापुड़।

सारांश –

आज के समय में विकास प्रशासन की प्रक्रियान्मुख और लक्ष्योन्मुख प्रशासनिक तन्त्र के रूप में माना गया है। विकास प्रशासन का उद्देश्य सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक दृष्टिकोण से अविकसित समाज का विकास करना है। विकास प्रशासन का एक निश्चित लक्ष्य जो कि आर्थिक तथा सामाजिक विकास से संबधित हो, जिससे की निर्धारित लक्ष्यों को पूर्ण किया जा सके। विकास प्रशासन की प्रक्रिया के माध्यम से विकसित राष्ट्र के निर्माण की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिए कुछ समस्याओं का सामना भी करना पड़ता है। जो कि राजनीति स्तर, आर्थिक स्तर व सामाजिक स्तर की समस्याएं हैं। राष्ट्रीय स्तर पर विकास प्रशासन के उद्देश्यों को पूर्ण करने में क्या–क्या समस्याओं का सामना करना होता है। यह जानना इस शोध पत्र को लिखने का मेरा उद्देश्य रहा है।

मुख्य शब्द – विकास प्रशासन, पर्यावरण, प्रशासनिक अधिकारी, परिवर्तन, नवीनीकरण योजनाएं, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक व्यवस्था।

विकास प्रशासन का अर्थ–

विकास प्रशासन की अवधारणा बहुत पुरानी नहीं बल्कि विकास से सम्बंधित प्रशासन से ली जाती है। इस भाब्द का प्रयोग तथा विश्लेशण, आधुनिक समय में सरकार द्वारा क्रियान्वित योजनावद्व ढंग से राष्ट्र की अर्थव्यवस्था में परिणात्मक एवं गुणात्मक दर से वृद्वि और समाज में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के सदंर्भ में किया जाता है। यह सरकार के प्रत्येक उस कार्य से संबधित है, जो विकासशील राष्ट्रों में आर्थिक, सामाजिक तथा राजनैतिक बदलाव लाने से अवधारणा युक्त है। यह नागरिक जीवन के आर्थिक,

राजनैतिक पहलुओं से सम्बंधित है। लोक कल्याण की भावना ही विकास प्रशासन का मुख्य लक्ष्य है।

'विकास प्रशासन' शब्द का प्रयोगभारत में एक प्रशासनिक अधिकारी **(यू. एल. गोस्वामी)** ने अपने लेख 'दि स्ट्रक्चर ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन इन इंडिया' में 1955 ई. में किया था। इसको लोकप्रिय **फ्रेड डब्लयू रिग्स, एडवर्ड वाइडनर, जोसेफ पोलोम्बरा** जैसे विद्व ानों ने बनाया था। लेकिन विकास प्र ाासन के पिता अमेरिकी विद्वान **जॉजे गैट** को माना गया है। विकास प्रशासन के सबसे बड़े भाश्यकार एडवर्ड वाईनर थे, इनकी पुस्तक का नाम 'डेवलपमैंट एडमिनिस्ट्रेशनः कॉन्सेप्टस् गोल्स एडं मैथेड्स' थो जो कि वर्ष 1979 में प्रकाशित हुई।

अतः विकास की अवधारणा का जन्म वर्तमान में नहीं हुआ किन्तु वर्तमान में हम विकास को जिस प्रकार से समझ पा रहे हैं। वह विकास की नई अवधारणा की व्याख्या है। वर्तमान समय में विकास बहुआयामी, राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानित यहां तक की सभी सर्वांगीण विकास से लिया जाता है। विकास की अवधारणा गत्यात्मक और प्रगतिशील जिसमें समय समय पर परिवर्तन देखने को मिलते रहे हैं। अत भूतकाल से वर्तमान काल तक के विकास में अनुभव के आधार पर परिवर्तन होते रहे हैं।

अतः यह राष्ट्र को नवीनीकरण की ओर ले जाने हेतु दिशा निर्देश एवं राज्य निर्माण तथा सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति की प्रक्रियाओं में महत्तवपूर्ण स्थान देने के लिए एक प्रशासनिक प्रयास है। संक्षेप में **ओ. पी. द्विवेदी** तथा **आर. बी. जैन** के शब्दों में 'विकास प्रशासन' लोक प्रशासन का वह पहलु है जो कि सरकारी प्रभाव के माध्यम से प्रगतिशील राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक लक्ष्यों में परिर्वतन पर जोर देता है। लोकतंत्र की आधारशिला जनता की सहमति, जनता की विकास में सामान्य भागीदारी तथा राजनीतिक व्यवस्था जनता के प्रति उत्तरदायित्वों पर टिकी हुई है। विकास प्रशासन को प्रभावी रूप प्रदान करने में संसद व्यवस्था के विभिन्न अंग व्यवस्थापिका व कार्यपालिका की महत्तवपूर्ण भूमिका प्राथमिक होती है और उन्हें अपने कार्य के प्रति उत्तरदायित्व बनाये रखने की दिशा में न्यायपालिका नियंत्रण का कार्य करती है। लेकिन व्यवस्थापिका की सार्थक भूमिका तभी है ज बवह जनता के हितों को ध्यान में रखकर उनके विकास के नये आयामों को स्थापित करे और लोककल्याणकारी नीतियों को बनाये रखने में सक्षम हो। लोकतंत्र में इसी दृष्टिकोण से विकास प्र ाासन ने उपयोगिता एवं आव यकता को अति महत्तवपूर्ण बनाया जाता है। अन्यथा इसके अभाव में विकास से सम्बंधित कार्यक्रम एवं नव योजना अपने निर्धारित लक्ष्यों से भटक जायेंगे।

विकास प्र ाासन की अवधारणा बहुत पुरानी नहीं है। इस भाब्द का प्रयोग तथा वि लेशण आज के समय में ही हुआ है। आज के समय में विकास प्र ाासन को प्रक्रियान्मुख और लक्ष्योन्मुख प्रशासनिक तन्त्र के रूप में स्थापित किया है। प्र ाासनिक विकास की क्षमता को बढ़ाने के लिए विकास के निर्धारित लक्ष्यों को कु ालता पूर्वक प्राप्त करने के लिए नियोजित विकास की प्रक्रिया अपनायी जाती है। तथ्यों की द्रश्टि से विकास प्र ाासन योजनाएं, नीतियां, कार्यक्रम तथा परियोजना से सम्बंधित है। विकास प्र ाासन का अर्थ न केवल जनता के लिए प्र ाासन है, वरन यह

ISSN 2321-0567
Vol. X, Issue II (Oct. – 2022)

जनता के साथ कार्य करने वाला प्र ाासन है। विकास प्र ाासन सरकार का कार्यात्मक पहलू है। जिसका तात्पर्य सरकार द्वारा जनकल्याण एवं जनजीवन को व्यवस्थित करने के लिए किए गए प्रयासों से है। विकास प्रशासन आधुनिक सुधारों एवं नवअभिकरणों पर निर्भर करता है एवं विकास ाील राज्य में प्र ाासन की सफलता उन सुधारात्मक कार्य परियोजनाओं एवं नवीन अभिकरणों पर टिकी है, जो प्र ाासन में प्रचलित दोशों को दूर करने के लिए अपनाये जाते हैं।

विकास प्र ाासन का उद्दे य सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक दृश्टिकोण से अविकसित समाज का विकास करना है। क्योंकि विकास प्र ाासन का सम्बंध सरकारी प्र ाासन के द्वारा की जाने वाली प्रक्रिया से है और सरकारी प्रयास जनता के कल्याण और प्रजातान्त्रिक मूल्यों से जुड़े रहते हैं। अतः इन्हें प्रजातांत्रिक मूल्यों से अलग नहीं किया जा सकता है। वर्तमान समय में कल्याणकारी राज्य में जनता के कल्याण की जो नयी योजनाएं चलायीं जाती हैं, उन नवीन कल्याणकारी कार्यक्रमों के उद्दे यों को पूरा करने में विकास की भूमिका मुख्य होती है। विकास प्र ाासन में प्र ाासनिक कु ालता को बहुत दिया जाता है, क्योंकि प्र ाासनिक कु ालता के अभाव में विकासात्मक उद्दे यों एवं लक्ष्यों को सफलतापूर्वक प्राप्त करना संभव नहीं होता है। विकास प्र ाासन के लिए जो नीतियां तथा योजनाएं बनाईं जाती हैं और जो लक्ष्य निर्धारित किये जाते हैं, उन्हें कम से कम समय में और लागत में कु ालतापूर्वक तरीके से प्राप्त कर लेना प्र ाासनिक कार्य कु ालता है। दे ा के सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक और औद्योगिक क्षेत्रों में आधुनिकीकरण के लिए कार्य करता रहता है।

विकास प्र ाासन का मुख्य उद्दे य प्र ाासनिक अधिकारियों की कार्यक्षमता एवं कार्य कु ालता का प्रयोग न केवल सामाजिक व राष्ट्रीय व्यवस्था व कानून को कायम रखने से है, और जनता के कल्याण व राष्ट्र के विकास में महत्तवपूर्ण भूमिका निभाता है, जिसने जिससे विकास ाील दे ा का सर्वांगीण विकास किया जा सके। विकास प्र ाासन मुख्यत कार्योन्मुख, लक्ष्योन्मुख, विकासोन्मुख तथा परिवर्तन उन्मुख प्र ाासनिक प्रणाली पर आधारित है। अतः हम कह सकते हैं

- विकासात्मक प्र ाासन का मुख्य लक्ष्य दि ाात्मक परिवर्तन लाना है, जिससे की सम्पूर्ण राष्ट्र के विकास का लक्ष्य निर्धारित किया जा सके।
- विकास प्र ाासन एक ऐसी स्थिति है जिससे आर्थिक, सामाजिक स्तर को बेहतर करने की कोि ा ा की जा सकती है।
- परिवर्तन विकास प्र ाासन की प्रकृति का मुख्य अंग है, कभी कभी कोई निर्धारित लक्ष्य निश्चित न होने के कारण यह बहुत परिवर्तन ाील है।
- विकास की योजनाओं को जोड़कर पूर्ण करने से यह निर्धारित समय में कम लागत से कई नि ि चत एवं अनि ि चत लक्ष्यों को प्राप्त करने में मददगार सिद्व होता है।
- विकास प्र ाासन सिर्फ विकास का ही प्र ाासन नहीं है, अपितु प्र ाासन का भी विकास होता है।
- विकास प्र ाासन विकसित एवं विकास ाील और अल्पविकसित राष्ट्रों के विकास में नवीनकरण लाने के लिए एक प्र ाासनिक एजेन्सी है।
- अतः यह राष्ट्र को नवीनीकरण की ओर ले जाने हेतु मार्गदर्शन, निर्दे ान देने एवं राष्ट्रों के

ISSN 2321-0567
Vol. X, Issue II (Oct. – 2022)

निर्माण तथा आर्थिक एवं सामाजिक प्रगति की प्रक्रियाओं में महत्तवपूर्ण प्रयत्न के लिए एक प्र ाासनिक प्रयास है।

- विकास प्र ाासन परिवर्तन अभिमुखीकरण है। जब तक प्र ाासन द्वारा भाासन प्रणालियों में परिवर्तन न लाया जाए तब तक किसी भी प्रकार का कोई विकास संभव नहीं हो सकता है। इसलिए विकास प्र ाासन को परिर्वतन अभिमुखीकरण कहा जाता है।
- विकासप्र ाासनकीमुख्यवि ोशतासंरचनात्मक पुनर्व्यवस्था संसाधनों को बढ़ाने के लिए सुधार संबधी योजना, गरीबी उन्मूलन तथा बेरोजगारी तथा नियोजन सम्बंधित कार्यक्रम परिवर्तन की ओर लक्षित होते हैं।
- लक्ष्यों का निर्धारण करके, आधुनिकीकरण, सामाजिक तथा औद्योगिकीकरण कार्मिक विकास आर्थिक प्रगति के साथ साथ संगठनात्मक विकास आदि भी विकास प्र ाासन का लक्ष्य है।
- विकास प्र ाासन की रूचि नवीन पद्वतियों, योजनाओं और नीतियों आदि में भी समय समय पर सुधार करके विकास प्र ाासन का उद्देश्य नि चत होता है। प्र ाासन की कार्य कु ालता में इससे तीव्र विकास होता है।
- जनता का विकास आव यकताओं की पूर्ति करने के लिए नवीन योजनाओं में परिवर्तन करके नि चत लक्ष्यों को तय किया जा सकता है।
- प्र ाासनिक मूल्यों का एक भाग कमजोर वर्गों का कल्याण करना है जिससे की कमजोर वर्गों को लाभान्वित किया जा सके, जिसके वे वास्तव में हकदार हैं, जो कि समाज के विकास की एक कड़ी है।
- विकास प्र ाासन सहयोगी एवं सहभागी प्रणाली के आधार पर कार्य करता है। कार्य योजनाओं को प्रभाव ाली बनाने के लिए स्थानीय जनता के सहयोग एवं सहायता के लिए तय लक्ष्यों को पूर्ण करना ही विकास प्र ाासन की वि ोशताहै। इसी वजह से पंचायती राज प्रणाली को योजना बनाने प्र ाासनिक कार्य में सम्मिलित होने का अवसर मिला है।
- विकास प्र ाासन उस पर्यावरण को आकार देता है जिससे राजनैतिक, सामाजिक तथा आर्थिक परिवे ा को परिस्थिति के अनुसार प्रभावित कर सकें।
- किसी भी राष्ट्र में आर्थिक, राजनीति व सामाजिक विकास के लिए परिवर्तन का नियोजन करना आव यकहै।नौकर ाहीपरआधारितप्र ाासनिक तन्त्र राजनीतिज्ञों तथा स्वयंसेवी संस्थाओं के साथ मिल जुलकर कार्य करना होता है।
- राजनीतिक तथा सामाजिक परिवे ाों में कभी भी अस्थिरता आ जाती है। यह विकास की प्रक्रिया नि चय ही आव यक है। अतः प्र ाासन इसमें मुख्य एजेंट के रूप में कार्य करता है।
- योजनावद्व विकास के द्वारा निर्धारित लक्ष्य स्थापित करके विभिन्न कार्यक्रमों व योजनाओं को प्राप्त किया जाता है।
- विकास करने के लिए आव यक होता है कि विकास को अग्रसर करने के लिए प्र ाासन का तरीका परम्परागत न होकर नए ढांचो, पद्वतियों तथा कार्यक्रमों को अपनाने के लिए तैयार हो।

अतः यह समाज को आधुनिकीकरण की ओर अग्रसर करने हेतु निर्देशन देने एवं राष्ट्र निर्माण तथा सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति की प्रक्रियाओं में योगदान देने के लिए एक प्र ाासनिक प्रयास है।

ISSN 2321-0567
Vol. X, Issue II (Oct. – 2022)

अमेरिका में तुलनात्मक लोकप्र ाासन समूह के विद्वानों द्वारा विकसित विकास प्र ाासन की अवधारण ाा मूलतः आधुनिक प्रगति की है। अपनी प्रकृति के कारण विकास प्र ाासन को विकास ाील राष्ट्रों में उभरती हुई नव–प्र ाासनिक व्यवस्था के साथ जोड़कर देखा जाता है। जो कि इन राष्ट्रों में व्यवस्था बनाए रखने के लिए प्रथम आव यकता है। विकास प्र ाासन में चार तत्वों या लक्ष्यों से परिभाशित किया जा सकता है।

परिवर्तनोन्मुखी राष्ट्रीय विकास का अर्थ सामान्यता संपूर्ण बदलाव तथा विकास होता है। इसके अर्न्तगत यह संभव नहीं है कि कोई भी महत्त्वपूर्ण आर्थिक, राजनैतिक या प्र ाासनिक परिवर्तन किसी सामाजिक मूल्यों या विचारों में बिना परिवर्तन के लाया जा सके। अतः विकास प्र ाासन की वि ाश्ट वि ोशता इसके द्वारा लाए गए सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन है। इसकी यही वि ोशता से इसे प्रचलनात्मक प्र ाासन से भिन्न करती है। जिसका मुख्य प्रयोजन यथा स्थिति बनाए रखना होता है। इस परिवर्तन की प्रक्रिया में नौकर ााह एक महत्तवपूर्ण भूमिका निभाता है।

लक्ष्योन्मुखी तथा परिणामोन्मुखी सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक प्र ाासनिक प्रगति तथा बदलाव के कार्य को सीमित समय सीमा के अर्न्तगत पूर्ण करना है। अतः विकास प्र ाासन के लिए यह अनिवार्य है कि लक्ष्योन्मुखी तथा परिणामोन्मुखी हो। विकास प्र ाासन की सफलता को इसके द्वारा तथा इससे जुड़ी प्र ाासनिक व्यवस्था के द्वारा लाई गई वृद्वि से देखा जाता है। उदाहरण के लिए उद्योग या कृशि क्षेत्र में उत्पादन की वृद्वि से, आर्थिक तौर से प्रति व्यक्ति की आय में वृद्वि से या सामाजिक तौर पर साक्षरता या स्थास्थय से देखा जाता है।

समस्याएं

राष्ट्र का प्र ाासनिक विकास उस गति से नहीं हो पा रहा है। जिस प्रकार होना चाहिए, बहुत सारी ऐसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जिनके रहते राष्ट्र का विकास कर पाना संभव नहीं है। उन समस्याओं का समाधान करके ही राष्ट्र का विकास किया जा सकता है। हमारे राष्ट्र का सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक विकास की गति धीमी है। विभिन्न समस्याओं के कारण –

- नवीन विचार भावना की कमी के कारण भी प्र ाासन में विकास की गति धीमी है। पुरानी विचारधारा से भाासन का संचालन किया जा रहा है। इसमें परिवर्तन करने की आव यकता दिखाई देती है।
- आज तकनीकी दौर चल रहा है। हमारे भाासन को चलाने के लिए तकनीकी क्षमता रखने वाले प्र ाासकों की कमी को महसूस किया जा रहा है।
- परम्परागत कार्यप्रणाली तौर तरीकों में बदलाव करे नवीन कार्यप्रणाली को प्र ाासन का एक माध्यम बनाया जाए।
- पारद ाता को बढ़ावा दिया जाए और गोपनीयता को समाप्त किया जाए।
- नवीन तकनीक, अभिप्रेरणा व पहल भाक्ति की कमी को पूर्ण किया जाए।
- सहयोग एवं समन्वय की प्र ाासनिक कार्य में कमी को दूर किया जाए।

ISSN 2321-0567
Vol. X, Issue II (Oct. – 2022)

- भाई भतीजावाद व भ्रश्टाचार का बढ़ता हुआ स्वरूप।
- उदासीनता की कमी के कारण उत्तरदायित्वों के प्रति जागरूक न होना।
- कागजी कार्यवाही एवं लालफीता ाही को अधिक महत्तव दिया जाना।
- विकास प्र ाासन के उद्दे यों को पूर्ण करने के लिए निम्न प्रकार की बाधाएं आती हैं, जिनकी वजह से हम बाधित परिणामों की प्राप्ति नहीं कर पाते हैं। उन समस्याओं का हल निकालकर ही हम राष्ट्र का विकास करने में सक्षम रहेंगे।
- **निष्पादन मूल्याकंन–** विकास प्र ाासन द्वारा जो भी योजनाएं, कार्यक्रमों को प्र ाासन द्वारा संचालित किया गया है। उनका मूल्याकंन भी एक बड़ी समस्या है। क्योंकि राष्ट्रों कीमत एवं लाभ के रूप में नहीं मापा जा सकता है। प्र ाासनिक निष्पादन का आंकलन कर पाना कठिन कार्य होता जा रहा है।
- **विकासात्मक कार्यक्रमों व योजनाओं का स्पष्टीकरण–** विकासात्मक कार्य उद्दे यों व परियोजनाओं को स्पष्ट कर पाना भी प्र ाासनिक योग्यता पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। जब किसी की कार्य उद्दे य स्पष्ट नहीं होगा, तो उनके द्वारा प्राप्त परिणाम दुष्परिणाम साबित होंगे, जो कि न्यायोचित नहीं होगा।
- **प्रशासन की संरचनात्मक समस्याएं–** कोई भी संगठनात्मक ढांचा उसकी कार्य क्षमता व योग्यता को प्रभावित करता है। विकास हेतु संगठन का ढांचा सरल व परिस्थिति के अनुकूल होना चाहिये।
- **जनता एवं प्रशासन के बीच मधुर सम्बंध–** नागरिकों एवं प्र ाासन के बीच मधुर सम्बंधो की कमी पायी जाती है। प्र ाासन की कार्यक्षमता एवं साम्र्थ्य के विकास में काफी बाधांए हैं जो कि विकास ाील दे ाों में देखने को मिलती हैं।
- **प्रशासनिक कर्मचारियों में सच्चाई एवं ईमानदारी की कमी–** प्र ाासन की कु ालता एवं साम्र्थ्य कर्मचारियों की ईमानदारी पर निर्भर है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. एम. लक्ष्मीकांत, लोकप्रशासन (2014)
2. मनोज सिन्हा, प्रशासन एवं लोकनीति (2012)
3. आरके सप्रू विकास प्रशासन
4. डर्विग होरोबिज, विकास की तीन दुनियायें
5. डॉ. बीएल फड़िया, लोकप्रशासन
6. माहेश्वरी, समग्र लोक प्रशासन